CHETANA
International Journal of Education
Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169
Peer Reviewed/
Refereed Journal
ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th August 2021, Revised on 29th August 2021, Accepted 28th Sept. 2021

शोध–पत्र

दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में वातावरणीय चुनौतियां

* नन्कू लाल, *शोधार्थी*
डॉ0 सीताराम पाल
असिस्टेन्ट प्रोफसर, श्रवणबाधितार्थ विभाग
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास, विश्वविद्यालय, लखनऊ
Email-nankulaldsmnru@gmail.com, Mob.-9415794816

मुख्य शब्द – *चुनौतियां, दृष्टि दिव्यांग एवं वातावरण आदि।*

सारांश

भारतीय पुनर्वास परिषद, नई दिल्ली के अनुसार अद्यतन उत्तर प्रदेश के कुल 2557 व्यावसायिकों ने दृष्टि दिव्यांगता के क्षेत्र में अध्यापन कार्य हेतु अपना नामांकन करा रखा है। उत्तर प्रदेश के कुल 07 सरकारी दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में कुल 1050 दृष्टि दिव्यांग बच्चों की नामांकन क्षमता है। दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में कार्यरत दृष्टि दिव्यांग एवं गैर–दिव्यांग शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियां में भिन्नता हो सकती है। दृष्टि बाधित शिक्षकों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में कार्यरत विशेष शिक्षकों के वातावरण से सम्बन्धित चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। गणना द्वारा प्राप्त 't' का मान 4.647 है, जो कि मुक्तांश 58 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी द्वारा प्राप्त 't' के मान से अधिक है, अतः परिकल्पना दृष्टि दिव्यांग एवं गैर–दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों के समक्ष आने वाली वातावरणीय चुनौतियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत हो गयी। उपकरण के कुल 21 कथनों में से 12 कथनों में सार्थक अन्तर पाया गया है, जिनमें से 10 कथन 0.01 व 2 कथन 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर प्रदर्शित कर रहें है, जबकि 10 कथनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमान से ज्ञात होता है कि दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों को गैर–दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों की अपेक्षा विद्यालय में वातावरणीय चुनौतियों का अधिक सामना करना पड़ता है।

परिचय

मनुष्य को किसी भी प्रकार की जानकारी अपने शरीर के पाँच इन्द्रियों– आँख, कान, नाक, जिह्वा तथा त्वचा के माध्यम से प्राप्त होता है, इसलिए इन इन्द्रियों को ज्ञान का द्वार अथवा ज्ञानेन्द्री कहा जाता है। सभी ज्ञानेन्द्रियों का अपना महत्व है, परन्तु आँखों का अपना अलग महत्व है। यह समस्त ज्ञानेन्द्रियों में सबसे ऊपर आता है, क्योंकि सबसे अधिक ज्ञान एवं अनुभव आँखों द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। विभिन्न अनुसन्धानों से यह प्रमाणित हो चुका है, कि मनुष्य वातावरण से प्राप्त सभी सूचनाओं का लगभग 80 प्रतिशत केवल आँखों के माध्यम से प्राप्त करता है। अतः आँखों की कार्यक्षमता में रुकावट उत्पन्न हो जाए या इसका शरीर में अभाव हो जाए तो मनुष्य दृष्टि जैसे प्राकृतिक उपहार से वंचित हो जाता है। जिस व्यक्ति में यह समस्या पाई जाती है उसे दृष्टि बाधित व्यक्ति कहा जाता है।

विश्व स्वास्थय संगठन के अनुसार विश्व की जनसंख्या का 15 प्रतिशत अर्थात् 1 बिलियन दिव्यांगता से ग्रसित हैं। दिव्यांगों की सघनता विकासशील देशों में ज्यादा पायी गयी है। गैर दिव्यांगों की तुलना में दिव्यांगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति भी दयनीय है। सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा दिव्यांगों में निरक्षरता, खराब स्वास्थ्य प्रबन्धन, बेराजगारी और निर्धनता दर अधिक है। विश्व बैंक के अनुसार दिव्यांगजनों के सामाजिक एवं आर्थिक समावेशन में मुख्य बाधा– भौतिक, पर्यावरण, परिवहन, तकनीकी, संचार, सेवा वितरण में अन्तर, सामाजिक भेदभाव और पूर्वाग्रह आदि शामिल हैं। गरीबी एवं कुपोषण, दिव्यांगता की प्रबलता को और बढ़ाते हैं (विश्व स्वास्थय संगठन, 2020)

भारतीय सामाजिक विकास रिपोर्ट, 2016 के अनुसार भारत में कुल दिव्यांगों में से 56 प्रतिशत पुरुष हैं, जिनमें से 70 प्रतिशत दिव्यांग ग्रामीण पृष्ठभूमि के हैं। जनसंख्या के अनुपात के आधार पर सबसे अधिक दिव्यांगजन– सिक्किम, ओडिशा, जम्मू व कश्मीर तथा लक्षद्वीप में पाए गए हैं, जबकि जनसंख्या में दिव्यांगजनो का सबसे कम अनुपात तमिलनाडु, असोम व दिल्ली राज्यों में पाया गया। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 45 प्रतिशत दिव्यांग निरक्षर हैं। आश्चर्य की बात यह है कि केरल जो कि शत–प्रतिशत साक्षर राज्य है, वहां के 33.1 प्रतिशत दिव्यांग निरक्षर पाए गए हैं। ध्यातव्य है कि भारत की साक्षरता दर लगभग 74 प्रतिशत है। भारत में किन्हीं कारण से 7.5 करोड़ बच्चे स्कूल नहीं जा पाते हैं, इनमें से लगभग एक–तिहाई बच्चे दिव्यांग हैं। इसके विपरीत जहां एक ओर 20 प्रतिशत बच्चे चलन बाधिता से ग्रस्त हैं, वहीं दूसरी ओर 0–6 वर्ष की आयु के केवल 9 प्रतिशत बच्चों में यह चलन बाधिता पाई गई, जो सम्भवतः पल्स पोलियो कार्यक्रम की सपफलता के कारण हुआ है। मानसिक दिव्यांगता व मानसिक गतिरोध वाले व्यक्ति सबसे कम संख्या में पाए गए हैं। सामाजिक विकास रिपोर्ट, 2016 के अनुसार, भारत में केवल 2 प्रतिशत दिव्यांग किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम से जुड़े हैं। वर्मा, आई0वी0 (1968) ने अपने शोध में दिशात्मक परिकल्पना का निर्माण किया और अनुसंधान हेतु 400 अध्यापकों को यादृक्ष्या लेकर यह निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों में विभागीय कार्य के पूर्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। श्रीवास्तव, एस0 (1986) ने प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों का व्यवसाय के प्रति कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया। विश्लेषण के फलस्वरुप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए– प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यवसाय के प्रति उच्च स्तर का कार्य सन्तुष्टि विद्यमान है। पुरुषों की अपेक्षा महिला शिक्षक, शहरी की अपेक्षा ग्रामीण शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि और व्यवसायिक ईमानदारी सार्थक रूप से अधिक पायी गयी। अस्थाना एवं सिंह (2004) ने बच्चों के शिक्षण में होने वाली चुनौतियों का अध्ययन किया और यह पाया कि पिछले 50 वर्षों से सरकारी संस्थाओं द्वारा ही अलाभित समूह के बच्चों के प्रति पर्यावरणीय, अभिवृत्ति, शैक्षणिक आदि के स्तर में सुधार आया है। अलाभित बच्चों के बौद्धिक शक्ति में कोई कमी नहीं है, ऐसे बच्चों को उचित अवसर प्राप्त होने वे बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। लियाकत हुसैन व अन्य (2011) ने अपने लेख 'रिलेशनशिप बिटवीन द प्रोफेशनल एटीट्यूड ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स विद दियर टीचिंग बिहेवियर' के माध्यम से शिक्षकों के उनके पेशे से सम्बन्धित व्यवहार को बताने का प्रयास किया है। प्रदत्त आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकाला गया, कि शिक्षकों और उनके शिक्षण व्यवहार के दृष्टिकोण के बीच गहरा सहसम्बन्ध है। रेचिया एवं पग (2011) ने विशेष विद्यालयों के पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में होने वाली समस्याओं पर अध्ययन किया गया। शोध के परिणाम में यह ज्ञात हुआ कि जो शिक्षक, विशेष शिक्षा से नहीं जुड़े हैं, वे विशेष विद्यालयों के पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के प्रति अधिक समस्या का अनुभव करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में कार्यरत दृष्टि दिव्यांग एवं गैर–दिव्यांग शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियां में भिन्नता हो सकती है। ऐसे शिक्षक जो दृष्टि दिव्यांग नहीं हैं, हो सकता है कि वे ब्रेल लिपि में पारंगत हो। अक्सर देखा जाता है कि गैर–दिव्यांग विशेष शिक्षक अलग–अलग विशेषज्ञता क्षेत्र से आते हैं। अतः विशेष शिक्षा के क्षेत्र का नगण अनुभव होने के कारण समस्या हो सकती है। दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षक, दृष्टि बाधित होने के कारण नौकरी के कुछ निश्चित क्षेत्र तक ही सीमित होते हैं। उन क्षेत्र में शिक्षण का क्षेत्र बेहतर माना जाता है, परन्तु इसमें भी दृष्टि बाधित शिक्षकों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे– विद्यालयों में आवागमन की समस्या, विद्यालय के परिवेश के अनुसार स्वयं को ढ़ालने में समस्या, विद्यालय का भौतिक वातावरण, सहयोगी शिक्षक व कर्मचारी से सम्बन्धित चुनौतियों का सामना करना आदि।

किसी भी समस्या को पूरी तरह समझने के लिए उस समस्या के समान अवयव की स्थिति की तुलना किसी अन्य परिस्थिति से की जाती है। तभी समस्या की व्याख्या पूरी तरह से की जा सकती है। विशेष अध्यापकों की चुनौतियों का पता लगाकर उसका उचित समाधान करना आवश्यक है। विभिन्न चुनौतियों को समझने के क्रम में उन्हें उत्पन्न करने वाले कारकों का भी समझना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसे में समस्या के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के स्तर का भी अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शोध में दृष्टि–दिव्यांग एवं गैर–दिव्यांग विशेष शिक्षकों की विद्यालय के वातावरणीय चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। इस शोध में उत्तर प्रदेश, राज्य सरकार द्वारा संचालित सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत विशेष शिक्षकों की विद्यालय के वातावरण से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य कथन

दृष्टि दिव्यांगज विशेष विद्यालयों में कार्यरत विशेष शिक्षकों के वातावरणीय चुनौतियों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

Ho1 दृष्टि दिव्यांग एवं गैर–दिव्यांग विशेष शिक्षकों के समक्ष आने वाली वातावरणीय चुनौतियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

भारतीय पुनर्वास परिषद, नई दिल्ली के अनुसार अद्यतन उत्तर प्रदेश के कुल 2557 व्यावसायिकों ने दृष्टि दिव्यांगता के क्षेत्र में अध्यापन कार्य हेतु अपना नामांकन करा रखा है। उत्तर प्रदेश के कुल 07 सरकारी दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में कुल 1050 दृष्टि दिव्यांग बच्चों की नामांकन क्षमता है। शोधार्थी के व्यक्तिगत जानकारी के अनुसार उत्तर प्रदेश में लगभग 24 दृष्टि दिव्यांग गैर–सरकारी विशेष विद्यलय अवस्थित हैं। सरकारी व गैर–सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों में कुल मिलाकर लगभग 363 शिक्षक कार्यरत हैं। इस शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में कार्यरत 28 दृष्टि दिव्यांग व 32 गैर–दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। इस शोध कार्य में स्वतंत्र चर– विद्यालय का प्रकार, दृष्टि दिव्यांगता, शिक्षक की पृष्ठभूमि, वृत्तिगत आय आदि हैं जबकि परतंत्र चर– शिक्षकों को विद्यालय में होने वाली विभिन्न वातावरणीय चुनौतियाँ हैं। प्रस्तुत शोध में विशेष शिक्षकों को आने वाली विभिन्न वृत्तिगत चुनौतियों के व्यापक और गहन अध्ययन के लिए अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप का चयन किया गया है। शोधकर्ता ने प्रश्नावली के तौर 21 कथनों वाले स्वनिर्मित अनुसूची मापनी उपकरण का उपयोग किया है।

तालिका संख्या–1

दृष्टि दिव्यांग तथा गैर–दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों के वातावरणीय चुनौतियों का 't' परीक्षण

कथन	समूह	न्यादर्श	मध्यमान	SD	SEM	टी–मान
योग	दृष्टि दिव्यांगजन	28	53.07	14.042	2.654	4.647*
	गैर–दृष्टि दिव्यांगजन	32	37.66	11.647	2.059	

*0.01 स्तर पर सार्थक है।

परिणाम

उपर्युक्त तालिका संख्या–1 द्वारा स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है, कि गणना द्वारा प्राप्त 't' का मान 4.647 है, जो कि मुक्तांश 58 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी द्वारा प्राप्त 't' के मान से अधिक है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि दृष्टि दिव्यांगजन एवं गैर–दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों के समक्ष आने वाली वातावरणीय चुनौतियों के मध्य सार्थक अन्तर है। परिकल्पना Ho1 दृष्टि

दिव्यांगजन एवं गैर–दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों के समक्ष आने वाली वातावरणीय चुनौतियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हो गयी।

रेखाचित्र संख्या–1

वातावरणीय चुनौतियों का मध्यमान

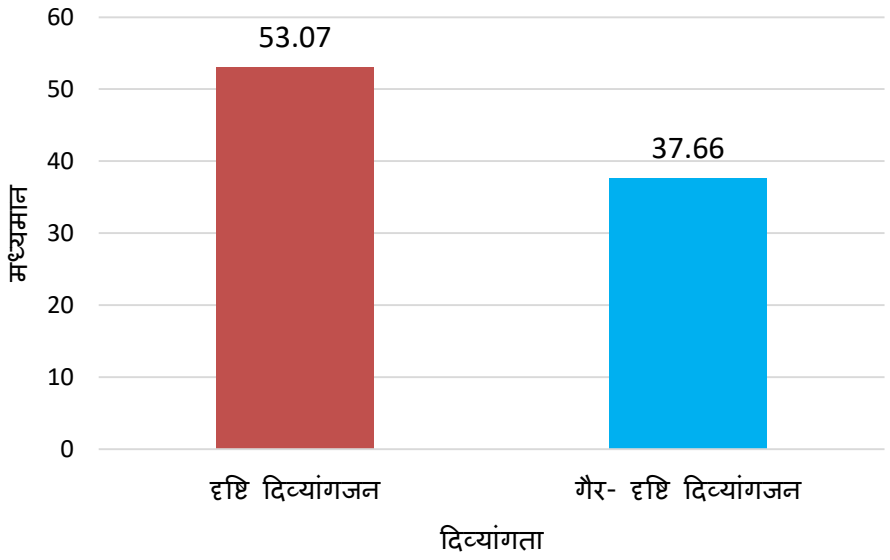

विवेचना

विद्यालय के वातावरण से सम्बन्धित चुनौतियों के परीक्षण के कुल 21 कथनों में से 12 कथनों में सार्थक अन्तर पाया गया है, जिनमें से 10 कथन 0.01 व 2 कथन 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर प्रदर्शित कर रहें है, जबकि 10 कथनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्यमान के अवलोकन से स्पष्ट है, कि दृष्टि दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों का माध्यमान 53.07 है, जबकि गैर–दृष्टि दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों का माध्यमान 37.66 है। अतः माध्य मूल्य के आधार पर कहा जा सकता है, कि दृष्टि दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों को गैर–दृष्टि दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों की अपेक्षा विद्यालय में वातावरणीय चुनौतियों का अधिक सामना करना पड़ता है। न्यादर्श के 16.67% विशेष शिक्षक पूर्ण सहमत हैं कि विद्यालय का भौतिक वातावरण विद्यार्थियों के आवागमन में बाधा उत्पन्न करता है जबकि 10.00% विशेष शिक्षक उक्त कथन से पूर्ण असहमत हैं, वहीं 48.33% विशेष शिक्षक उक्त कथन से सहमत हैं और 13. 33% असहमत। यद्यपि 11.67% विशेष शिक्षक अनिश्चित हैं, कि विद्यालय का भौतिक वातावरण विद्यार्थियों के आवागमन में बाधा उत्पन्न करता है। परिणामतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 39(65.00%) विशेष शिक्षक मानते हैं, कि विद्यालय का भौतिक वातावरण विद्यार्थियों के आवागमन में बाधा उत्पन्न करता है। लगभग 16.67% विशेष शिक्षक पूर्ण सहमत हैं कि विद्यार्थियों को गतिशीलता और अभिविन्यास सीखने में समस्या का सामना करना पड़ता है। जबकि 3.33% विशेष शिक्षक उक्त कथन से पूर्ण असहमत हैं, वहीं 48.33% विशेष शिक्षक उक्त कथन से सहमत हैं और 23.33% असहमत। यद्यपि 8.33% विशेष शिक्षक अनिश्चित हैं, कि विद्यार्थियों को गतिशीलता और अभिविन्यास सीखने में समस्या का सामना करना पड़ता है। परिणामतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 39(65.00%) विशेष शिक्षक मानते हैं, कि विद्यार्थियों को गतिशीलता और अभिविन्यास सीखने में समस्या का सामना करना पड़ता है। न्यादर्श के 35.00% विशेष शिक्षक पूर्ण सहमत हैं कि विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सामग्री को दृष्टि दिव्यांगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए। जबकि 0% विशेष शिक्षक उक्त कथन से पूर्ण असहमत हैं, वहीं 46.67% विशेष शिक्षक उक्त कथन से सहमत हैं और 16.67% असहमत। यद्यपि 1.67% विशेष शिक्षक अनिश्चित हैं, कि विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सामग्री को

दृष्टि दिव्यांगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए। परिणामतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 49(81.67%) विशेष शिक्षक मानते हैं, कि विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सामग्री को दृष्टि दिव्यांगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए।

विद्यालय के वातावरण से सम्बन्धी अनेकों समस्याएं होती है, त्रिपाठी, एम0के0 (1978) ने विद्यालय में संगठनात्मक वातावरण तथा अध्यापकों के शिक्षण व्यवसाय पर अध्ययन किया और बताया की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है, जबकि प्रस्तुत शोध निष्कर्ष द्वारा दृष्टि दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों को गैर–दृष्टि दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों की अपेक्षा विद्यालय में वातावरणीय चुनौतियों का अधिक सामना करना पड़ता है। अतः प्रस्तुत शोध परिणाम त्रिपाठी, एम0के0 (1978) के शोध परिणाम से असमर्थ है। यह असमर्थता न्यादर्श के दृष्टि दिव्यांगजान होने के कारण हो सकता है, जबकि त्रिपाठी के शोध में समस्त शिक्षक गैर–दिव्यांग थे।

निष्कर्ष

दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में कार्यरत दृष्टि दिव्यांग एवं गैर–दिव्यांग शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियां में दृष्टि बाधित शिक्षकों अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। गणना द्वारा प्राप्त 't' का मान 4.647 है, जो कि मुक्तांश 58 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना दृष्टि दिव्यांग एवं गैर–दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों के समक्ष आने वाली वातावरणीय चुनौतियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत करता है तथा मध्यमान से पता चलता है कि दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों को गैर–दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों की अपेक्षा विद्यालय में वातावरणीय चुनौतियों का अधिक सामना करना पड़ता है।

सीमाएं

प्रस्तुत शोधकार्य के दौरान शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित सीमाओं की अनुभूति की गयी–

- न्यादर्श की शैक्षिक योग्यता, प्रशिक्षण और अनुभव को अध्ययन में चर के तौर पर लेना और भी समीचीन होता।
- गैर–दृष्टि दिव्यांगजन में अन्य दिव्यांगता को सम्मिलित करने से शोध के परिणामों की व्यापकता बढ़ जाती।
- न्यादर्श के सामाजिक चुनौतियों को अध्ययन में सम्मिलित करने से अध्ययन का क्षेत्र और भी व्यापक होता।

शैक्षिक अनुप्रयोग

प्रत्येक शोध कार्य का शैक्षिक निहितार्थ होता है, इस शोध के परिणाम भी शैक्षिक निहितार्थ से युक्त हैं, प्रस्तुत शोध के कुछ प्रमुख शोध निहितार्थ निम्नलिखित हैं–

- दृष्टि दिव्यांगजन विशेष शिक्षकों को विद्यालय के भौतिक वातावरण से सम्बन्धी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन से उन चुनौतियों का पता लगाया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन दृष्टि दिव्यांग विशेष विद्यालयों में अपेक्षित व्यवस्थागत सुधार करने में एक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन से दृष्टि दिव्यांग व गैर–दृष्टि दिव्यांग विशेष शिक्षकों की वर्तमान में विद्यालयी स्थिति का पता लगाया जा सकता है।

सन्दर्भ

Asthana, A., & Sigh, P. K. (2004). Challenges in educating disadvantaged children. *Indian Journal of Psychology*, 1, (2), 243 – 250

लियाकत हुसैन, डॉ0 जामिल नूर, सिबतैन, अली शाह (2011). रिलेशनशिप बिटवीन द प्रोफेशनल एटीट्यूड ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स विद दियर टीचिंग बिहेवियर. बिहेवियर इंटरनेशनल जर्नल आफ एकेडमिक रिसर्च इन बिजनेस एंड सोशल साइंस, 1, 31

श्रीवास्तव शोभा (1986). ए स्टडी ऑफ जॉब सटिस्फैक्शन एण्ड प्रोफेशनल ऑनेस्टी ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर एण्ड इण्टरमिडिएट टीचर विथ नससरी सजेशन. शोध प्रबन्ध, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

वर्मा, आई0वी0 (1968). एन इन्वेस्टीगेशन इन टू दि इम्पेक्ट ऑफ ट्रेनिंग ऑन दि वेल्यूज एटीट्यूट, परसनल प्राब्लम्स एण्ड एडजेस्टमेन्ट आफ टीचर्स, शोध प्रबन्ध, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

Recchia, S. L., & Puig, V. I. (2011). Challenges and inspirations: Student teachers' experiences in early child hood special education classrooms. *The Journal of the Teacher Education*, 34, 2, 133-151

ताहिरा खातून एवं जेड हसन (2000). माध्यमिक शिक्षकों में कार्य संतुष्टि का व्यक्तिगत चरों– लिंग, अनुभव, व्यवसायिक प्रशिक्षण, वेतनमान एवं धर्म से सम्बन्ध. भारतीय शिक्षा सर्वे, 36, 1, 64–75

गुप्ता, एस0के0 (1989). अ स्टडी ऑफ स्पेशल नीड्स प्रोविजन फॉर द एज्यूकेशन ऑफ चिल्ड्रन विद विजुवल हैण्डीकेप्स इन इंग्लैण्ड एंड वेल्स एंड इन इंडिया. एसोसिएशनशिप स्टडी, इंस्टीट्यूट ऑफ एज्यूकेशन, लंदन।

**** Corresponding Author***
नन्कू लाल, *शोधार्थी*
डॉ0 सीताराम पाल
असिस्टेन्ट प्रोफसर, श्रवणबाधितार्थ विभाग
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास, विश्वविद्यालय, लखनऊ
Email-nankulaldsmnru@gmail.com, Mob.-9415794816